प्रारंभिक कुषाण राजा

- चीनी ग्रंथों शिएन-हान-शू और हाउ- हान-शू से इस वंश के प्रारंभिक इतिहास की जानकारी मिलती है |
- कुषाण वंश के लोग मध्य एशिया कि यू-ची जाति से सम्बंधित थे |
- हूणों द्वारा वहां से हटाए जाने पर यू-ची जाति कि एक शाखा तिब्बत कि और आ कर बस गयी और दूसरी शाखा सीस्तान और बैक्ट्रिया होते हुए उत्तरी पश्चिमी भारत आ कर बस गयी |
- शिएन-हान-शू चीनी स्रोत से पता चलता है कि यू ची कबीले के लोग पांच प्रदेशों में विभक्त थे _
    1.हिउमी
    2.शु-आंग-मी
    3.कई- शुआंग (कुषाण)
    4.हि-तुन
    5.काओ-फू
- फान-ए के चीनी ग्रन्थ हाउ- हान-शू से पता चलता है कि कई- शुआंग (कुषाण) के सरदार (याबगू) क्यू-त्सियु-क्यो ने अन्य चारों प्रदेशों को विजित कर संगठित किया और सबका राजा (बांग) बन गया |
- क्यू-त्सियु-क्यो का समीकरण कुजुल कडफिसेस से किया जाता है जो कडफिसेस प्रथम कि उपाधि थी | कुषाण शाखा का यह राजा कुजुल कडफिसेस या कडफिसेस प्रथम था |

कुजुल कडफिसेस

- इसे कडफिसेस प्रथम के नाम से भी जाना जाता है | इसकी विजयों के बारे में हाउ- हान-शू से पता चलता है |
- इसने पार्थियनों पर आक्रमण कर किपिन तथा काबुल पर अधिकार कर लिया |
- इसके समय सम्पूर्ण अफगानिस्तान और गंधार प्रदेश कुषाण राज्य के अंतर्गत थे |
- इसके सिक्कों से पता चलता कि प्रारंभ में ये यूनानी रजा हर्मियास का सामंत था परन्तु बाद में इसने अपनी स्वतंत्रता स्थापित कर ली क्यों एक प्रकार के सिक्कों पर हर्मियास का नाम मिलता है परन्तु दूसरे प्रकार के सिक्कों पर कुजुल ने राजकीय उपाधियाँ जैसे - “महारजस महतस कुषण-कुयुल कफस” ली है |
- पह्लवों को पराजित कर कुजुल ने काबुल क्षेत्र पर अधिकार कर लिया |
- इसने केवल ताम्बे के सिक्के जारी किये

- इसके सिक्कों पर 'धर्मथिदास' तथा 'धर्मथित' उत्कीर्ण होने के कारण कुछ इतिहासकार ये मानते हैं कि कुजुल ने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था |
- कुजुल का शासन काल 25 ई0पू0 से 25 ई0 के बीच माना जाता है |(सन्दर्भ-प्रो प्रशांत श्रीवास्तव, लखनऊ विश्वविद्यालय)|

विम तक्षुम

- काफी समय तक इतिहासकार इस बात पर सहमत थे कि कुजुल के बाद विम कडफिसेस कुषाणों का राजा हुआ परन्तु हालही में उत्तरी अफगानिस्तान से प्राप्त *रबतक अभिलेख* से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुजुल कडफिसेस के बाद उसका पुत्र ***विम तक्षुम*** कुषाणों का राजा हुआ जो विम कडफिसेस का पिता था | कनिष्क, ***विम तक्षुम*** का पौत्र(grand-son) था |इस अभिलेख में इन चारों राजाओं के नाम के साथ शाओ(*shao*) उपाधि भी जोड़ी गयी है |.(सन्दर्भ - en.wikipedia.org/wiki/Rabatak_inscription)
- एक बड़े क्षेत्र पेशावर से रूस तक, तुर्किस्तान से मथुरा तक, यहाँ तक कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के बनारस , गाजीपुर से कुछ ऐसे सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसपर बिना किसी राजा का नाम उत्कीर्ण हुए लेख मिलता है ' *बैसिलिओस बैसिलिओन् सोटर मेगास*' | इन सिक्कों को विम तक्षुम के सिक्के मानाने का आग्रह इतिहासकारों ने किया है |
- विम तक्षुम के सिक्कों का बड़ी संख्या में तथा इतने बड़े क्षेत्र में विस्तृत होने से ये एक शक्तिशाली कुषाण राजा माना जा सकता है |

विम कडफिसेस

- यह कुषाणों में पहला राजा है जिसने सोने के सिक्के जारी किये | इसके अतिरिक्त इस राजा ने ताम्बे के सिक्के भी चलाए |
- इसके सिक्के पश्चिम में आक्सस- काबुल घाटी से लेकर पूर्व में सिंध क्षेत्र तक विस्तृत थे |
- कुछ सिक्के भीटा , कौशाम्बी (प्रयाग), बक्सर एवं बसाढ़ (बिहार)से मिले हैं |
- इसके सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में 'महाराजस राजाधिराजस सर्वलोगिश्वरस महिश्वरस विम कडफिसेस त्रतरस' उत्कीर्ण मिलता है |
- इसके सिक्कों पर शिव, नंदी, एवं त्रिशूल कि आकृतियाँ हैं जिससे इसका शैव मतावलंबी होना पता चलता है \
- सोने के सिक्के साम्राज्य कि समृद्धि और सम्पन्नता का सूचक है |